

स्वतंत्रता संग्राम में डॉ हेडगेवारजी की भूमिका



अधिकांश लोगों का मानना है कि पूज्य डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी ने बस मातृभूमि की पूजा की और भारत की सुरक्षा और सम्मान के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित करने के लिए एक प्रसिद्ध संगठन की स्थापना की। उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक और कुशल आयोजक के रूप में जाना जाता था, लेकिन वे एक महान क्रांतिकारी, स्वतंत्रता सेनानी, उत्साही वक्ता और महान विचारक भी थे। इसकी जानकारी कुछ ही लोगों को है।

जो लोग सवाल उठाते हैं कि स्वतंत्रता संग्राम में “आरएसएस” ने क्या भूमिका निभाई, उन्हें डॉ हेडगेवार जी, उनके संघर्ष, उनके कठोर कारावास और उन्होंने लोगों को ब्रिटिश शासन से लड़ने के लिए कैसे प्रेरित किया, के बारे में जानना चाहिए। 1925 में आरएसएस के गठन के बाद, न केवल संघ के स्वयंसेवकों बल्कि कई राष्ट्रवादियों को भी उनके भाषणों और जमीनी कार्यों से प्रेरित किया गया था। यह जानने के लिए पढ़ें कि कैसे उन्होंने इतनी बाधाओं के बावजूद ब्रिटिश शासन से लड़ने के लिए लाखों लोगों को प्रेरित किया।

मई 1921 में, कटोट और भरतवाड़ा में डॉ. हेडगेवार के आक्रामक भाषणों के जवाब में, उन्हें ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार द्वारा राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। सुनवाई 14 जून, 1921 को अदालत में शुरू हुई, जिसमें स्मेमी नाम के एक ब्रिटिश न्यायाधीश ने कार्यवाही देखी। कुछ दिनों की सुनवाई के बाद, डॉ हेडगेवार ने इस अवसर का उपयोग राष्ट्रीय जागरण के लिए करने का फैसला किया और अपनी पैरवी खुद करने का फैसला किया।

5 अगस्त, 1921 को उन्होंने अपना लिखित बयान पढ़ा, जिसमें उन्होंने कहा, “मुझ पर आरोप है कि मेरे भाषणों ने भारतीयों के मन में यूरोपीय लोगों के खिलाफ असंतोष, घृणा और देशद्रोह की भावना पैदा की है।” मैं इसे अपने महान देश का अपमान मानता हूँ कि एक विदेशी सरकार यहां एक स्थानीय नागरिक से सवाल कर रही है और उसे जज कर रही है।

मैं नहीं मानता कि आज भारत में एक वैध सरकार है। अगर ऐसी सरकार मौजूद है तो यह आश्चर्यजनक है अगर यह दावा किया जा रहा है तो। आज जो भी सरकार मौजूद है, वह एक भारतीयों से छीनी हुई शक्ति है, जिससे एक दमनकारी शासन अपनी शक्ति प्राप्त करता है। आज के कानून और अदालतें इस अनधिकृत व्यवस्था की कृत्रिम कृतियां हैं। जनता की चुनी हुई सरकार है जो दुनिया के ज्यादातर देशों में लोगों के लिए बनी है, और वह सरकारें सही कानूनों की शासक हैं। सरकार के अन्य सभी रूप केवल धोखाधड़ी हैं जिन्हें शोषकों ने छीन लिया है-शोषकों ने असहाय देशों को लूटने के लिए उनपर नियंत्रण लिया है।

मैंने जो करने की कोशिश की वह मेरे देशवासियों के दिलों में रहने के लिए पर्याप्त था। मैं अपनी मातृभूमि के प्रति श्रद्धा की भावना जगा सकता हूँ। मैं लोगों को समझाने की कोशिश कर रहा हूँ कि भारत देश का अस्तित्व कायम है। यह भारत के लोगों के लिए अभिप्रेत है।

अगर कोई भारतीय अपने देश के लिए राष्ट्रवाद फैलाना चाहता है और देशवासियों को अपने देश के बारे में बेहतर महसूस कराने के इरादे से कुछ बोलता है, उसे देशद्रोही नहीं माना जाना चाहिए और जो लोग राष्ट्रवाद फैलाते हैं, भारत की ब्रिटिश सरकार उन्हें देशद्रोही मानती है, तो मैं कहना चाहता हूँ कि वह दिन दूर नहीं है जब सभी विदेशियों को भारत छोड़ने के लिए मजबूर किया जायेगा।

मेरी भाषा की सरकार की व्याख्या न तो सटीक है और न ही व्यापक।

मेरे खिलाफ कुछ भ्रामक शब्द और बेतुके वाक्य लगाए गए हैं, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यूनाइटेड किंगडम और यूरोप के लोगों के साथ व्यवहार करते समय, दोनों देशों के बीच संबंधों को नियंत्रित करने वाले सिद्धांतों को ध्यान में रखा जाता है। मैंने जो कुछ भी कहा, मैंने इस विचार को पुष्ट करने के लिए कहा कि यह देश भारतीयों का है और हमें अपनी स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। मैं अपने हर शब्द के लिए पूरी जिम्मेदारी स्वीकार करता हूँ। हालांकि मैं अपने ऊपर लगे आरोपों पर आगे कोई टिप्पणी नहीं करना चाहता, लेकिन मैं अपने भाषणों में कहे गए हर शब्द का बचाव करने के लिए तैयार हूँ और यह घोषणा करता हूँ कि मैंने जो कुछ भी कहा वह सही था।

उनके बयान को सुनकर न्यायाधीश ने कहा, “उनका अपना बचाव बयान उनके मूल बयान से ज्यादा राष्ट्रविरोधी है।” यह कथन पढ़ते ही न्यायालय द्वेष और घृणा से भर गया। डॉ. हेडगेवारजी ने एक संक्षिप्त भाषण के साथ इस कथन का अनुसरण किया। उन्होंने कहा, “भारत भारतीयों के लिए है।” इसलिए हम आजादी की मांग कर रहे हैं, जो मेरे सभी भाषणों का सार कहता है। लोगों को बताया जाना चाहिए कि आजादी कैसे और कब हासिल करनी है। अगर हमें यह मिल जाए तो हमें भविष्य में कैसे कार्य करना चाहिए? अन्यथा, यह पूरी तरह से संभव है कि स्वतंत्र भारत में लोग अंग्रेजों की नकल करने लगेंगे। हालाँकि अंग्रेज दूसरे देशों पर दमनकारी तरीकों से हमला करते हैं और शासन करते हैं, लेकिन जब अपने देश की स्वतंत्रता की बात आती है, तो वे खून बहाने को तैयार रहते हैं। यह हाल के युद्ध द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम अपने लोगों, प्यारे देशवासियों से कहें कि अंग्रेजों की गुस्से वाली हरकतों की नकल न करें। बिना किसी दूसरे देश की जमीन वगैरह हथियाने के बजाय अपनी आजादी शांति से प्राप्त करो। बस अपने देश में ही सन्तुष्ट रहो।

“मैं इस विमर्श को बनाने के लिए वर्तमान राजनीतिक मुद्दों को उठाना बंद नहीं करूँगा।” यह सभी के लिए स्पष्ट है कि अंग्रेज हमारे प्यारे देश पर अपना दमनकारी शासन थोप रहे हैं। वह कौन सा कानून है जो कहता है कि एक देश को दूसरे पर शासन करने का अधिकार है? मेरे पास आपके लिए एक सरल और सीधा सवाल है, सरकारी वकील। क्या आप कृपया जवाब दे सकते हैं? क्या यह प्राकृतिक न्याय का उल्लंघन नहीं है? यदि किसी देश को दूसरे पर शासन करने का अधिकार नहीं है, तो अंग्रेजों को भारत पर शासन करने का अधिकार किसने दिया? और हमारे लोगों को कुचल दो? और खुद को इस देश का मालिक घोषित करते हैं? क्या यह उचित है? क्या यह नैतिकता की सर्वाधिक चर्चित हत्या नहीं है?

हमें ब्रिटेन पर अधिकार करने और उस पर शासन करने की कोई इच्छा नहीं है। जैसे ब्रिटेन और जर्मनी में ब्रिटिश लोग स्वयं शासन करते हैं, वैसे ही हम भारतीय स्वशासन का अधिकार और अपना काम करने की स्वतंत्रता चाहते हैं। हमारा दिमाग ब्रिटिश साम्राज्य की गुलामी के विचार के खिलाफ विद्रोह करता

है, और इस बात को जोड़ता है कि हम इसे सहन नहीं कर सकते। हम “पूर्ण स्वतंत्रता” से कम कुछ भी स्वीकार नहीं करेंगे। अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो हमें शांति नहीं मिलेगी।

मैं कानूनी नैतिकता में विश्वास करता हूँ और कानूनों को तोड़ा नहीं जाना चाहिए। मैं मानता हूँ कि कानून टूटने के लिए नहीं है, बल्कि बनाए रखने के लिए है। यही कानून का प्राथमिक लक्ष्य होना चाहिए।”

डॉ. हेडगेवार द्वारा कोर्ट को देशभक्ति का पत्र लिखे जाने के बाद कोर्ट ने अगस्त में अपना फैसला सुनाया। अदालत ने उन्हें यह वचन देने का आदेश दिया कि वह अगले एक साल तक देशद्रोही भाषा का प्रयोग नहीं करेंगे और 3000 रुपये की जमानत राशि जमा करनी होगी।

डॉ. हेडगेवार की प्रतिक्रिया थी, “मेरी आत्मा कहती है कि मैं पूरी तरह से निर्दोष हूँ।” मुझे और मेरे साथी भारतीयों को दबाना सरकार की कुनीतियों के कारण पहले से ही जल रही आग में पेट्रोल डालने के समान है। मुझे विश्वास है कि वह दिन आएगा जब विदेशी शासन अपनी गलतियों के लिए भुगतान करेगा। मुझे सर्वशक्तिमान ईश्वर के न्याय पर पूर्ण विश्वास है। नतीजतन, मैं स्पष्ट रूप से कहता हूँ कि मैं आदेशों का पालन नहीं करूँगा।”

जैसे ही उन्होंने अपना उत्तर समाप्त किया, न्यायाधीश ने उन्हें एक वर्ष कठोर कारावास की सजा सुनाई। डॉ. हेडगेवारजी अदालत कक्ष से निकले, जहाँ भारी भीड़ जमा थी। उन्होंने उन्हें संबोधित किया और कहा, “जैसा कि आप जानते हैं, मैंने व्यक्तिगत रूप से देशद्रोह के इस मामले में अपना बचाव किया है।” हालांकि, लोग अब भ्रमित हैं कि पक्ष में बहस करना भी राष्ट्रीय आंदोलन के खिलाफ धोखाधड़ी का कार्य है; हालांकि, मैं मानता हूँ कि जब किसी व्यक्ति पर झूठा मुकदमा चलाया जाता है तो वह खुद को मरने के लिए छोड़ देना मूर्खता होगी। विदेशी शासकों के पापों को पूरी दुनिया के ध्यान में लाना हमारी जिम्मेदारी है। इसे देशभक्ति के रूप में संदर्भित किया जाएगा, लेकिन अपनी रक्षा करने में विफल रहना कुछ मायनों में आत्महत्या करने के बराबर होगा। आप चाहें तो खुद उनकी रक्षा कर सकते हैं, लेकिन भगवान के लिए जो आपसे असहमत हैं, वे कम देशभक्त हैं ऐसा विश्वास मत करो। यदि हमें अपने देशभक्ति के कर्तव्य के पालन में जेल जाने के लिए कहा जाता है, या यदि हमें दंडित किया जाता है और अंदमान भेजा जाता है, या फांसी पर लटकाने की सजा दी जाती है, तो हमें अपनी इच्छा से ऐसा करने के लिए तैयार रहना चाहिए, लेकिन किसी को भी इस धारणा के तहत नहीं सोचना चाहिए कि जेल जाना ही सब कुछ है, और यही स्वतंत्रता प्राप्त करने का एकमात्र तरीका है। वास्तव में, हमारे पास जेल के बाहर अपने देश की सेवा करने के और भी कई अवसर हैं। मैं एक साल में आपके पास वापस आऊँगा। मुझे यकीन है कि मैं तब तक आप सभी के संपर्क में नहीं रहूँगा, लेकिन मुझे यकीन है कि ‘पूर्ण स्वतंत्रता’ आंदोलन को गति मिली होगी। भारत के विदेशी उपनिवेशवादियों के लिए अब देश में ज्यादा समय रहना संभव नहीं है। मैं आप सभी को धन्यवाद देना चाहता हूँ और अलविदा कहना चाहता हूँ।”

जेल से लौटने के बाद, अपने स्वागत समारोह के दौरान, डॉ हेडगेवार ने कहा, “यह तथ्य कि मैं एक ‘अतिथि’ के रूप में एक वर्ष के लिए सरकारी जेल में कठोर शिक्षा भुगत कर आ रहा हूँ, मेरी योग्यता में कोई नई बात नहीं है, और अगर यह वास्तव में मेरी योग्यता में वृद्धि दर्शाता है, अगर ऐसा है तो

सरकार को श्रेय लेना चाहिए। आज हम अपने देश की दृष्टि में सर्वोच्च स्थान रखते हैं और सबसे शानदार विचार रखते हैं। कोई भी विचार जो पूर्ण स्वतंत्रता से कम है वह हमें पूर्ण सफलता नहीं देगा। आपको यह बताने के लिए कि हम अपने लक्ष्य को कैसे प्राप्त करना चाहते हैं, आपकी बुद्धि का अपमान होगा, अगर हम इतिहास के पाठों से नहीं सीखते हैं। भले ही मृत्यु हमारे रास्ते में हो, हमें अपनी यात्रा जारी रखनी चाहिए। भ्रमित मत हो ; हमें अपने मन में परम लक्ष्य का दीप जलाते रहना चाहिए और अपनी शांतिपूर्ण यात्रा पर चलते रहना चाहिए।” (स्रोत : अरुण आनंद, पांच सरसंघचालक पुस्तक)

संघ अपने काम के बड़े पैमाने पर प्रचार में विश्वास नहीं करता है, इसलिए स्वतंत्रता संग्राम के दौरान और स्वतंत्रता के बाद संघ के कार्य देश में कई लोगों के लिए अज्ञात हैं।

(लेखक पंकज जगन्नाथ जयस्वाल राष्ट्रवादी विषयों पर शोधपूर्ण लेख लिखते हैं व इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं)

7875212161

